

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

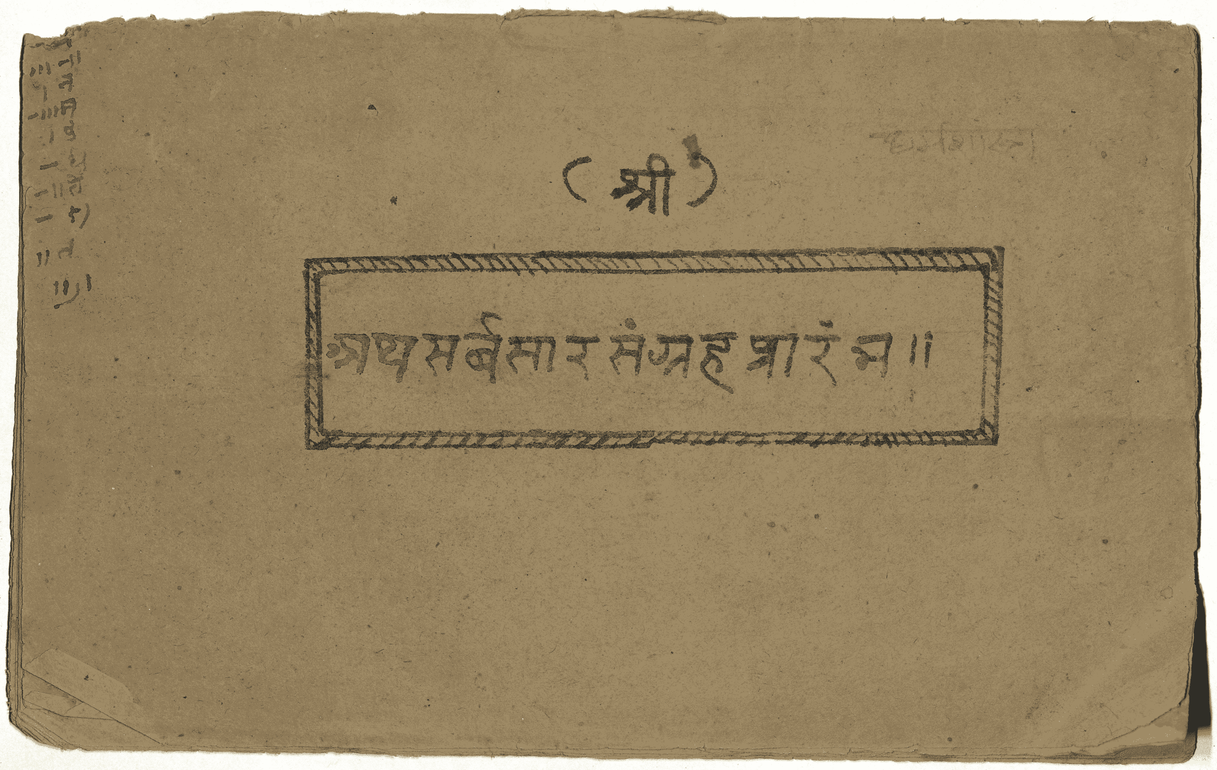
M-2077

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रंथालय
हस्तलिखित संग्रह
दाखल क्र. M 2077 विषय धर्मशास्त्र
नांव सर्वसारसंग्रह cmss.
लेखक / लिपीकार –
पृष्ठ १४ काळ – पूर्ण / अपूर्ण

Checked 2012

M-2077

M-2077


(श्री)

अथसर्वसारसंग्रहआरंभ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्रीगणेशायनमः श्रीशारदायनमः श्रीगुरुभ्योनमः श्लो॰
नित्येयाने गृहेजीरो प्राशनेपरिधानके॥ वधूप्रवेश
सांगत्येनमौढ्यंगुरुशुक्रयोः१ टीका॥ नित्यगमनमेंपुत्रगो
घरमेप्रवेशकरनोअंनप्राशनमेपरिधानमेनवबधूप्रवेशमेसांग
त्यकार्यमेगुरुयाशुक्रकादोषनहीं१ श्लोक॥ गर्भोत्थानारिका
अन्नप्राशनान्तमत्रिमुचे॥ आकर्णवेधाःस्युः
क्रियानान्याइत्याहत्नाकरः२ टीका॥ गर्भोत्थानसेप्रा
रिभेके अंनप्राशनान्तसंस्कारकर्णवेधइत्यादिकार्यनत्वमासमेकरनेकादोष
नहीं२

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्रीगणेशायनमः श्रीशारदायनमः श्रीगुरुभ्योनमः श्लो॰
नित्ये यानेगृहेजीर्णे प्राशनेपरिधानके॥ वधूप्रवेश
मांगल्येनमौढ्यंगुरुशुक्रयोः१ टीका॥ नित्यगमनमेंपुराणे
घरमेप्रवेशकरनेमेंअन्नप्राशनमेपरिधानमेनवबधूप्रवेशमेमांग
ल्यकार्यमेगुरुयाशुक्रकादोषनहीं१ श्लोक॥ गर्भोत्थानादिका
न्नप्राशनान्तमत्रिमुच्चे॥ आकर्णवेधाःस्युः
क्रियानान्याइत्याहभास्करः२ टीका॥ गर्भोधानसेप्रा
रितेकेअन्नप्राशनान्तसंस्कारकर्णवेधइत्यादिकार्यनत्वमासमेकरनेकादोष
नहीं२

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्लो॰ तीर्थश्राद्धं दर्शश्राद्धं प्रेतश्राद्धं सपिंडनं॥
चंद्रसूर्यग्रहे स्नानंमत्वमासेविचीयते३ टीका॥
तीर्थश्राद्ध दर्शश्राद्ध प्रेतश्राद्ध सपिंडी कर्म सूर्य चंद्र ग्रहणमे तीर्थस्नान म
त्वमासमेंअवश्य कर्तव्य है और कर्मनिषेध्यहै३ श्लो॰॥ एकोदर प्र
सूता नांकन्य कानां करग्रहे॥ ज्येष्ठायामेलननंवी
क्षेलक्ष्मीनां नैवचिन्तये त्४॥टीका॥ एक उदरसेउ सन्नह
ईकन्या२ तथाअधिक का विवाह किया चाहैंतहां ज्येष्ठ कन्या का मेलना
दिक देख करसबका विवाह करदेनेसे को ईदोषनहीं है४॥ श्लो॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

यत्रार्कगुर्वोरपि नैक्यनांत्येजन्मादिदुस्थानग
योर्ज्यो वा ॥ एकस्य पूजामपि तत्र कृत्वापा
णिग्रहंकार्यामतः कदाचित् ५ टीका ॥ कोइसमयेमस्
र्य गुरु अष्ट म८ द्वादश १२ चतुर्थ ४ वाजन्मादि १ एअस्थानों मेंदोनो होतोए
क कीपूजाकरके विवाकरदेवे तोदोष नही परंतु क इनमें सेंमि त्रादिअचिकारमेंहो
यतब वा क न्या १२ बर्षउरांतहोयतबकरणे ५ फेरो ॥ प्राचामहानि
मुनयः प्रबदंति सप्तयाम्यामतीव शुक्लदानि दिना
निपंच ॥ त्रिएवपश्चिमादिशिक्षितिनायका

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

नांप्रस्थानकेषडिवसद्वयमुत्तरस्याम् ॥टीका॥
जोमनुष्यपरदेशजानेकामुहूरतकढाताहैऔरउसदिनउसकाजानानहीं
बणैतोप्रस्थानकरदेवेउसकानेमयहहैकिपूर्वदिशाकादिन७दक्षिण
दिशाकादिन५पश्चिमदिशाकादिन३उत्तरदिशाकादिन२औरयहविन
हीबनेतोमुनिकालवेनाह ॥श्लो॥मन्मयेपत्रपृष्ठेवा
श्रायशेतामत्रभाजने ॥नाश्नीयादपिचेद्भुंक्ते
नरकंप्रतिपद्यते ७ टीका॥इतनेपात्रमेभोजननहीकरनाम
टीकामे१अरुपत्तलकीपीठपर२अरुलोहामे३तांबाकापात्रमे४अरुकमलके

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

पत्ताकीपीठपरइतनेपात्रोमेभोजननहीकरनाअरजोकरतेहैसोनरक
मेजातेहैऔरकइतनेकापत्ताकीपीठपरभोजननिषिद्धहै॥ श्लो॥

क्रूरवारेक्रूरहोरानशस्ताइतिमंगले॥
नीतिदुष्टाशुभेवारेराद्धौस्वल्पेफलंयमता॥

रीका॥ मंगलकार्योमेक्रूरवारकेदिनक्रूरहोराश्रेष्ठनही॰ शुभवारोंमेंक्रू
रहोराहो॰ तो ज्यादादोषनहींकरता॰ तथाराद्धिकोक्रूरहोराहोतोस्वल्प
दोषहै॰ "श्लो॰॥ काकस्यवचनंश्रुत्वापादछायाचकारयेत्॥ त्रयोदश्यांतंकृत्वाग्रहनिर्भोग

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

माहरेत् ९ टीका ॥ मनुष्य को जाते समय काजला बोलतो अपनें शरीर की
छाया को पांवसें नें पैजित नें पांव होय उत नें पांव गिनें और उस में १३ तेरा मिलावें
फिर ८ आठका भागदेना ९॥ श्लोक ॥ लाभंसौख्यन याहा
निः शोकत्व मयमेव च ॥ लक्ष्मी प्राप्तिस्त याधुः
खंशून्ये शून्य फलंन्नवेत् १० टीका ॥ १ बचेंतो लाभ २
बचेंतो निसे च ३ बचेंतो हानी ४ बचेंतो शोक ५ बचेंतो भय ६ बचेंतो
लक्ष्मी प्राप्ति ७ बचेंतो दुःख १० श्लोक ॥ प्राक् शिराः शयने
विद्यात् धन मायुश्च दक्षिणे ॥ पश्चिमें प्रबला

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

चिंताहानिमृत्युरधोत्तरे११टीका॥ रात्रिकोजोमनुष्य
पूर्वकोशिरकरके सोवे तोधनलाभहोवेप्रदक्षिणाकोकरके सोवेतोआयुसंपन्न
बुद्धिबढे अरुपश्चिम कोकरके सोवेतो प्रबलचिंताहोवेप्रदक्षिणकोकरके
सोवेतोहानित्यामृत्युहोवे॥श्लोक॥दीपंसूपंतथाशय्यां
पादत्राणांचमार्जनीम्॥स्नानंनांतेयःस्पृशेद्वि
प्रःपुनःस्नानेनशुद्धयति१२टीका॥जोब्राह्मणनहाके
रकेदीवाकेसूपकेखाटकेजुतिकेनारीकेजोहाथलगातेहैवहशूद्रवतहोता
तेहैइसवास्तेफिरस्नानकरकेशुद्धहोना१२॥श्लोक॥सूतकेमृ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

तके क्षोरे चांडालस्पर्शेनेतथा॥ यज्ञसूत्रं नवीनंतु
धारणा मनुरब्रवीत्१३ टीका॥ ब्राह्मणा कोइतने ठीकानेप
रजनेउ पेरणा चाहीय सूतकमा मृतक के क्षीने मे २ सवा रक रा कर
के३ चांडालयाने नीचआदमी का क्षीनमे नवीनजनेऊ धारणकरना१३

श्लोक॥ पतितंचुटितंवापिब्रह्मसूत्रंयदा भवेत्
नूतनंधारयद्विप्रः स्नानसंकल्पपूर्वकम्१४ टीका॥
प्रगरजो ब्राह्मणाकीजनेऊ गिरज्याय या टूट ज्याय तो स्नान करके संकल्प
पूर्वक नवीनजनेऊ धारणकरना१४ श्लोक॥ पात्रमध्येय

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

पापात्रं हस्तमध्येय घृतम् ॥ अपोशनं विना
भुक्तं त्रयंगो मांस भोजनम् १५ टी ॥ पात्रमे पात्र धरके १ हाथ
मेंधरके २ एककाल का झूठा ३ इतने भोजन ही करना १५ इतने जो मांस खाते है
प्रेतो क ॥

नालिकेरजलं पीत्वा कांस्यमध्येमधुस्तथा ॥
ताम्रपात्रेपयः पीत्वा सुरापानसमं भवेत् १६ टी ॥
के त्या काजल १ ना रेल काजल २ कांसी का बरतनमे सहत ३ ताचा का बरतनमें
दूध यह इतने पात्रमे पान नही करना जो इनो करते है सो सराब पान करते है १६

श्लोक ॥ अश्वारूढे गजारूढे खड्गारूढे

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

कपाणिना ॥ संध्याशेषंजलंपीत्वापंच
तोयंसरसम १७ टीका ॥ घोडाउपरचढे १ हा थीउपर
चढे २ खाटउपरचढेउ एकहाथसेजलनहीपीसंध्यासेजो शेष पाणीबचे
सोजलयंनहीपीना ५ यहदारुसमान है १७ श्लोक ॥ शौचां
ते पादशौचांते तर्पणंते चयज्जलम् ॥
हस्तेहस्तमध्येहस्तात् पंचतोयंसरास
म १८ टीका ॥ दिशाकाअंतकाजल १ पांवधोनेकाअंतकाजल २ तर्पण
काअंतकाजल ३ दुसरेकाहाथसेजलनहीपीवेना ४ अन्यहाथसे पाणीनहीपिना
यहदारुसमानहै १८

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्लोक ॥ नामाक्षराणि त्रिगुणा कृतानी ॥ तुरंग
देशे तिथि मिश्रि तानि ॥ प्रष्टौ च नागंत्व मतिच
शेषं ॥ समे च कन्या विषमे च पुत्र १९ टीका ॥ जो स्त्रीग
ने णी होय उस के नाम का हर फ त्रिगुणा करे घरु घोडे का नाम का हर फ गिणना
प्ररु जिस दे ग्राम रहु उस दे ग्रा का हर फ ले ना प्ररु बर्त्त मान तिथि मिला ना फिर द
ग्रांठ का भाग दे ना शे ष प्रंक २ ब चे तो कन्या प्ररु १ ब चे तो पुत्र यह एक म है १९
श्लोक ॥ प्रक्षोन समायु क्तां मधौ कृष्णा त्रयोदशी
॥ गंगा यां यदि लभ्यते सूर्य ग्रहशतैः समाः २०॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

शनिवारसमायुक्ता शनौ शतविषा यदि ॥ महा म
हेतिविख्याता त्रिकोटि कुलमुद्धरे त् २१ टीका॥
जो चैत्र बुद १३ शनिवार हो यशत विषा नक्षत्र होय तो महा चारुणी योग होताहै इस
योगमे स्नानदान करना क्योंकि सूर्य १०० अहरा से गंगा स्नानसे जो पुण्य कि प्राप्ति होति
है सो इस योग मे स्नानदान कर वे से पुण्य होता है अरु तिन कोटि कुल का उद्धरो ना है २१
श्लोक॥ नवारदोषः प्रभवंतिरात्रौ ॥ देवेज्य
दैत्येज्य दिवाकराणाम् ॥ दिवासुधा कार्कज
भूसुतानां ॥ सर्वत्रनिंद्योबुधवारदोष: २२ टीका॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

गुरुवार शुक्रवार इतवार इनवारों की रात्रिमें कार्य करो कारोषनहीं है
अरु शनिवार सोमवार मंगलवार इनवारों के दिनमें कार्य करो कारोषनहीं है
अरु बुधवार सदाही निंदित है २२ श्लोक॥ बुध्यघटिकापं
चसौरीमध्याह्नमेवच॥ राहुके तौचरात्रौ
चजीवेचंद्रेचसंध्ययो २३ टीका॥ जोरात्रिकरनालोतो
उसके समयकहते हैबुधका ५ घडी दिनचढेहोताहै अरु शनिकाबुधरात्रि
उसदिनका होताहै अरु राहूकातथाकेतुकातारात्रिकालहोताहै अरु गुरु
कातथाचंद्रमाका ४ घडी दिनबाकीसे होताहै २३

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्लोक ॥ उदयेसूर्यशुक्रौ चभौमे चघटिकाद्वयम् ॥
समे कालेन कर्त्तव्यं दातारो प्राणघातकः २७ टीका ॥

सूर्यप्रतु शुक्र का बडी फजरपिल का दलप्रतु मंगल का दो घडी २ दिन च

ढे दान करना प्रजा रजो सम टाल करके दान करता है तो दाता का प्राण नाहोता है २७

श्लोक ॥ देशान्तरे मृतस्यैवतिथिर्नज्ञायतेयदि ॥
कृष्णाष्टमीवाऽमावस्या कृष्णा चैकादशीत्रयं २८

टीका ॥ जो कोसी की मृत्यु परदेश मे होगइ होय प्रतु उस का तिथि

का मालुम नही पडतो कृष्णपक्ष की प्रष्टमी १४ तथा मावस ३० तथा ए

कादशी ११ यह तिथि करना चाहीय २८

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्लोक॥ सैका तिथिर्द्वादशयुता च तासां शेषेण
रोगे चेच्चुविवन्हि बासः॥ सौख्यायहोमेशशि
युग्मशेषे प्राणार्थनाशोदिविभूतलेच २६ टीका॥
शुक्लपक्ष की प्रतिपदा सेआदिले के तिथिगिणनी फिर १और मिलाव
णु-र वि बार सेआदिलेकर के बार मिलाणा फेर ४का नागदेना
शेष उ तथा० बचैतो पृथ्वीपर बा सोजाणा शु पुनहै अरु १बचै
तोआकाशमेंअशु नहै अरु २बचैतोपातलमेंबा सोजाणा नु अशु नहै यह
रीतिहवनके विषेकीहै २६ श्लोक॥ तैलाभ्यंगेचिता

दाहे मैथुने क्षौरक र्मोणि ॥ स्नानंयावन् नकुरु
ते तावच्चांडालत्वउ च्यते २७ टीका ॥ शरीरकैतैल लगाके
चितादाह मे मैथुनका अंतमें क्षौरकरा के जब तक स्नानन्हीकरेतबत
क चांडालतुल्यहै २७ श्लोक ॥ शूद्रोदकं शूद्रप क्कं शू
द्रेणसह भोजनं ॥ इहजन्मनि शूद्रत्व चांडा
लः कोटिजन्मसु २८ टीका ॥ शूद्रसेलायेजल शूद्रसेबनायोपका
न्न तथाशूद्रजनोंके साथ भोजनस्वीकारकरतो इसजन्मेमे उसीको शूद्रसमझ नाअरुकोडज
नपर्यंत चांडालयोनिमेजन्मलेताहै २८ श्लोक ॥ आयुष्यंप्राङ्मु

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

खोजुंक्तेयशस्चीदक्षिणासुखःश्रियंप्रत्यङ्मुखो
जुंक्तेश्रेयोजुंक्तेउदङ्मुखःरव २९ टीकाजोभोजनकर्तीसमयपू
र्वकीतरफमुखरखेंतोआयुरद्धिकरैपरुदक्षिणकीतरफरखेंतो यशप्राप्तिअरूप
श्चिकीतरफलक्ष्मीहोयउत्तरमुखकरैतोसुख २९ श्लोक॥ पुत्रवाँस्तु
गृहेनित्यंनाश्रीयादुत्तरामुखः सोमवारेतथा
मंगंपर्वजेतु सदाबुध्यः३० टीका॥ परंतुपुत्रवान्पुरुषघ
रमेभोजनउत्तरमेंमुखकरकेभोजनमुलकरनहीकरनाअरुसोमवारनें तैला
भ्यंगनहीकरना ३० श्लोक ॥ संक्रमंचयथाकुर्यात्तस्मा

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

नरानजल्यादि के।अन्य पाप एक माणि निस्फ
लानि भवंति च३१ सेषा संकल्प मूलः को मो वै
यज्ञाः संकल्प संभवाः॥ जलं नियम च मैं च स
र्वे संकल्पः स्मृताः३२ टीका॥ जो कोइ शुभ कर्म करै सो
संकल्प करके करणा स्नान दान व्रतादिक संकल्प से स॰ होय रूप॰ निहोय
श्लोका॰ मा॰ स॰ मूल है यज्ञादि सिद्धि संकल्प से है व्रत नियम सर्व संकल्प से सिद्धि
है इसीसे विद्वान क॰ करते हैं सो निष्फल है ३०।३१

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्लोक॥ बापीकूपतडागयज्ञगमनंक्षौरंप्रतिष्ठा
व्रतंविद्यामंदिरकर्णबेधनमहादानंगुरोःसेवनं॥
तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनंमंत्रोपदेशोशु
नंदूरेरोचजिजीविषुःपरिहरेत्संगुरोर्भोगच

मउ२ टीका॥ बावडी१ कूवा२ तलाव३ यज्ञ४ गांचजाना५ जइलाउतरा
ना६ नयामकानकि प्रतिष्ठा७ व्रत८ विद्यापढाना९ मंदिकराना१० कानबि
धाना११ जबरादान१२ गुरुकरना१३ तीर्थनहाना१४ विवाहकरना१५
मंत्रकाउपदेशलेनौंयहइताकाम शुक्रग्रह गुरुकास्त मेनहीकरना१६

श्लोक ॥ हस्तस्त्वष्ट्रेवासवंवारुणं चशैवंपि
त्यंत्रीणिचैवोत्तराणि ॥ प्राजापत्यं चापिनक्ष
त्रमाहुः कूपारंचेश्रेष्ठ माद्यामुनींद्राः ३३
टीका ॥ हस्तचित्रा॰स्वा॰च॰शा॰प्र॰म॰उत्तराउरोहिणीयत्
कूपारंनमेश्रेष्ठहै उ श्लोक ॥ हस्तद्वयेब्रह्मयुगे
मघायांपुष्येच निष्कात्रयंवरोत्तरेषु ॥ मू
लानुराध्याहयरेवतीषुस्थिरेषुतत्रैनेषुब
धूप्रवेशाः ३४ टीका ॥ एतानक्षत्रशुभेप्रशस्तसोम॰

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

शुक्र॰ गुरु यह बारश नहै अरु २।५।८।११ यहलग्नश्रेष्ठहैअरु चंद्र
बलिष्ठरेखनाअरु यहबर्ष।३।५ श्रेष्ठ३४ श्लोक॥ शुचौ
देशेप्रतिष्ठाप्यस्थिरमासनमात्मनः॥ नात्यु
च्छ्रितंनातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरं ३५
तत्रैकाग्रंमनःकृत्वायतचित्तेंद्रियक्रियः॥
उपविश्यासनेयुंज्याद्योगमात्मविशुद्धये ३६
टीका॥ प्रबयोगाभ्यासमें आसननियमकरतेहैंजैसे किपवित्रस्थानमे
नअतिऊँचानअतिनीचाओरप्रथमकुशासनतिसपरमृगचर्मतिसप

र वस्त्रऐसा प्रचल आपका आसन स्थापित करिके तिसपर बैठिके एकाग्रमन करिके
चित्तको इंद्रियोंकी क्रियाको वशकियेहुयेआत्माका संसारबंधछूटनेके वास्तेयो
गाभ्यास करै॥३५।३६ श्लोक॥ समंकायशिरोग्रीवंधा
रयन्नचलंस्थिरः॥ संप्रेक्ष्यनासिकाग्रंस्वं
दिशश्चानवलोकयन्३७ प्रशांतात्मा वि
गतभीर्ब्रह्मचारिव्रतेस्थितः॥ मनःसंय
म्यमच्चित्तोयुक्तआसीतमत्परः३८ टीका॥
अबैठनेका नेमकहतेहैं मस्तक शरीर गला क ग्रीवा इनको अचलस्थिरको समधारण

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

कि ये भये प्रापकी नासिकाके अग्र भागपर दृष्टि कोराखिवकेकोई भी दूसरी दिशें
कोनरेखते भयेप्रणांत चितब्रह्मचर्यब्रतउक्त सोब्रह्मचर्य तीन प्रकारकाहै
१ उपकुर्वोरणकजो वेदाभ्यासकरनेपर्यंतस्त्रीकात्याग २ नैष्ठिकजो
मरणपर्यंतस्त्रीकात्याग३ तो ३ एकपत्नीव्रतरूप इनमेंसेअधिकारप्रमा
ण कोई लेमेंभी स्थितप्रोचित्तमेरेमेलगाये नये मनकोसंयममेरा
रिवकवहआत्मनिष्ठपुरुषमेरेही कोचिंतवनकरताभयास्थितहोय॥

३७।३८॥ श्लोक॥ रुद्रादित्यावसवोयेचसा
ध्याविश्वेऽश्विनौमरुतश्चोष्मपाश्च॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

जंधर्वेष्वप्सुरसिद्धसंघावीक्ष्यंते त्वांचि
त्रिताश्चैवसर्वे३९ टीका॥११ एकादशरुद्र१२ सूर्य-
वसुश्चौरजोसाध्यनामकेदेवताहैंवेश्वे१३ विश्वेदेव२ अश्विनौक
मार४९ वायुश्चौरउष्मपायानेपितर गंधर्व हा हा हू हू इत्यादिक
यक्षकुबेरादिकप्रसुर विद्याधरादिक सिद्धकपिलादिक सिद्धों
के समूहयै सर्वविस्मयको प्राप्तभयेइयेतुमकोदेखतेहैं३९॥

श्लोक॥ कच्चिदेतच्छ्रुतंपार्थत्वयैकाग्रेण
चेतसा॥ कच्चिदज्ञानसंमोहःप्रणष्तस्तेधनं

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

जय ४० टीका॥ भगवान पूछतैरैं कि हे पार्थजो मैंने कहासो क्या
तुमने एकाग्रचित्त करिंके सुनाया नहीं जो सुनातौहे धनंजय क्या
तुह्मारा अज्ञानसेउत्पन्नभयामोहनष्टभयाकिंकेसासोकहो ४०

श्लोक॥ नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्र
साद न्मयाऽच्युत॥ स्थितोस्मि गतसंदे
हः करिष्येवचनंतव ४१ टीका॥ अर्जुनकह
तेहैं किहेअच्युततुह्मारीकृपासेमोहनष्टभयाऔमैंस्मृतिकोप्राप्तभ
याअबसंदेहरहितस्थितहौंइसवास्तेआपकाबचनपानेस्वधर्मरूपयु-
द्धकरौंगा ४१

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्लोक॥ जो कारंयज्ञतपसांसर्वलोकमहे
श्वरम्॥सुहृदंसर्वभूतानां ज्ञात्वामांशं
तिमृच्छति ४२ टीका॥ प्रतिसुगमउपायकहतेहैं यज्ञ
औ तपका भोक्ता सर्वलोकौंके ईश्वरौं का भीईश्वरतमीश्वरा
णांपरमंमहेश्वरंअर्थ ईश्वरौंका भी ईश्वर होयउसको महेश्व
रकहतेहैं औ० सर्व भूतमात्रका सुहृदप्रेमीहैको
जानिके शांतिको प्राप्त होताहै४२॥ श्लोक॥पिता
हमस्यजगतोमाताधाता पितामहः॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

वेद्यं पविघ्नमों कार ऋक्सामयजुरेव च४३

टीका॥ इस स्थावरजंगमरूपजगत्कार्पिता माताधारण

करनेवाली दारा इनरूपमेंहीं हौं ग्रौ वेद मेंपविघ्नकारक

अथवाजानिवेजोग ग्रोंपविघ्नकारकजोवस्तुहै सोमेंहीं हौं४३

श्लोक॥ यत्रयोगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थो

धनुर्धरः॥ तत्रश्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवानी

तिर्मतिर्मम४४॥ अन्वयः॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णः य

त्रधनुर्धरः पार्थः तत्र श्रीः विजयः भूतिः ध्रुवा नीतिः इतिममम्रतिः४४

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

टीका ॥ जहां योगेश्वर कृष्ण ओ जहां धनुषके धरनेवाले अर्जुन हैं
तहां ही अचला संपत्ति ओ अचल विजय अरु अचल ऐश्वर्य ओ अरु च
ल नीति है ऐसा मेरे को निश्चय होता है ४१ ॥ पुनः ॥ श्लो॰
मेषेऽर्के सन्नवतो द्वाहौ गंगा गोदांतरेपि च सर्वः सिंह गुरुर्वैर्ज्यः क
लिंगे गोऽ गुर्जरे १ अर्थ ॥ जब मेषका सूर्य होय तब विवाहारिंभ
गत्वीक कार्य गंगा ज्यो भागीरथी गोदावरी ज्योनाशिकमें है सो
इन दोन्युके विच के रे शो में सिंहस्थ गुरु [redacted]
होय अरु मेष को सूर्य आजाय तो विवाहारिंभ गत्वीकार्य करणा

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

शुभ्र है अतः संघ्रामसिंह स्य गुरु कलिंग देश में गोड देश में
गुर्जर देश में अजित है। इति सिद्धांत ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

सूर्य के पुत्र श्राद्धदेव नाम सातवें मनु होत भये जो वर्तमान हैं ताके पुत्र के नाम
सुनो इक्ष्वाकु। नभग। धृष्ट। शर्याति। नरिष्यंत। नाभाग। सातमें दिष्ट।
करूष। पृषध्र। वसुमान यह दश पुत्र हैं यह वैवस्वत मनु के पुत्र हैं। अब देवता
सुनो आदित्य। वसव। रुद्र। विश्वे देवता। मरुद्गण। अश्विनीकुमार। भृगु यह
देवता हैं और तिन को इन्द्र पुरंदर नाम इंद्र होत भये। अब सात ऋषि कहते
हैं कश्यप १ अत्रि २ वसिष्ठ ३ विश्वामित्र ४ गौतम ५ जमदग्नि ६ भारद्वाज ७ सप्तऋषि हैं इस मन्वंतर के कश्यप पते और कश्यप ज्यों रहत तिक सका
सेन गवा नज न मलेते नये

[OrderDescription]
,CREATED=03.10.19 11:56
,TRANSFERRED=2019/10/03 at 12:01:26
,PAGES=35
,TYPE=STD
,NAME=S0001937
,Book Name=M-2077-SARVSARSANGARAH
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF
,FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF
,FILE27=00000027.TIF
,FILE28=00000028.TIF
,FILE29=00000029.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

FILE30=00000030.TIF
,FILE31=00000031.TIF
,FILE32=00000032.TIF
,FILE33=00000033.TIF
,FILE34=00000034.TIF
,FILE35=00000035.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection